टिप्पणी

3

व्यावसायिक पर्यावरण

किसी भी स्थान पर एक व्यावसायिक इकाई को सफलता पूर्वक चलाने के लिए उस पर्यावरण की समझ बहुत ही महत्वपूर्ण है जिसमें व्यवसाय का परिचालन होना है। क्योंकि पर्यावरण के तत्व व्यवसाय के लगभग सभी पहलुओं को प्रभावित करते हैं चाहे वह व्यवसाय की प्रकृति हो, इसका स्थान हो, उत्पाद का मूल्य हो, वितरण प्रणाली या कर्मचारी सम्बन्धी नीतियां हों। इसीलिए व्यावसायिक पर्यावरण के विभिन्न तत्वों के सम्बन्ध में जानना महत्वपूर्ण है। ये तत्व हैं, व्यवसाय का आर्थिक पहलू, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पहलू, राजनैतिक ढांचा, वैधानिक पहलू एवं तकनीकी पहलू, आदि। इस अध्याय में हम व्यावसायिक पर्यावरण की अवधारणा, इसकी प्रकृति एवं महत्व तथा पर्यावरण के विभिन्न घटकों का अध्ययन करेंगे। इसके साथ–साथ हम व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व एवं व्यावसायिक नैतिकता के सम्बन्ध में भी जानकारी प्राप्त करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप :

- व्यावसायिक पर्यावरण का अर्थ समझा सकेंगे;
- व्यावसायिक पर्यावरण के लक्षणों की पहचान कर सकेंगे;
- व्यावयायिक पर्यावरण के महत्व एवं इसके प्रकारों का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय अर्थव्यवस्था में हाल में ही हुए उन परिवर्तनों का वर्णन कर सकेंगे जिन्होंने भारत में व्यावयायिक इकाइयों के कार्यों को अत्यधिक प्रभावित किया है;
- व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा को समझा सकेंगे;

टिप्पणी

- व्यवसाय में हित रखने वाले विभिन्न समूहों के प्रति व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों का उल्लेख कर सकेंगे;
- व्यावसायिक नैतिकता की अवधारणा को समझा सकेंगे और
- व्यवसाय एवं उद्योग पर सरकारी नीतियों में परिवर्तन का उल्लेख कर सकेंगे।

3.1 व्यावसायिक पर्यावरण का अर्थ

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, प्रत्येक व्यवसाय की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वह स्वयं को उस पर्यावरण के अनुरूप बना ले जिसमें यह कार्य करता है। उदाहरण के लिए, जब सरकारी नीतियों में परिवर्तन होता है तो व्यवसाय को भी इन नीतियों के अनुरूप स्वयं को ढालने के लिए व्यवसाय में आवश्यक परिवर्तन करने होते हैं। तकनीक में परिवर्तन वर्तमान उत्पादों को चलन से बाहर कर देते हैं जैसे कि कम्प्यूटर ने टाइप राइटर का स्थान ले लिया है और रंगीन टेलीविजन ने ब्लैक एण्ड वाइट टेलीविजन को चलन से बाहर कर दिया है। इसी प्रकार फैशन में परिवर्तन अथवा ग्राहकों की रुचि में परिवर्तन भी बाजार में उत्पाद विशेष की मांग में परिवर्तन ला सकता है जैसे कि जीन्स की मांग ने अन्य पारम्परिक पहनावों की बिक्री को कम कर दिया है। यह सभी ऐसे बाह्य तत्व हैं जो व्यवसाय के नियन्त्रण के बाहर हैं। अतः व्यवसाय को अपनी व्यावसायिक सफलता एवं अस्तित्व को बनाए रखने के लिए इन परिवर्तनों के अनुरूप अपने आपको ढालना पड़ता है। अतः व्यावसायिक पर्यावरण की अवधारणा एवं इसके विभिन्न तत्वों की प्रकृति को स्पष्ट रूप से समझना अत्यन्त आवश्यक है।

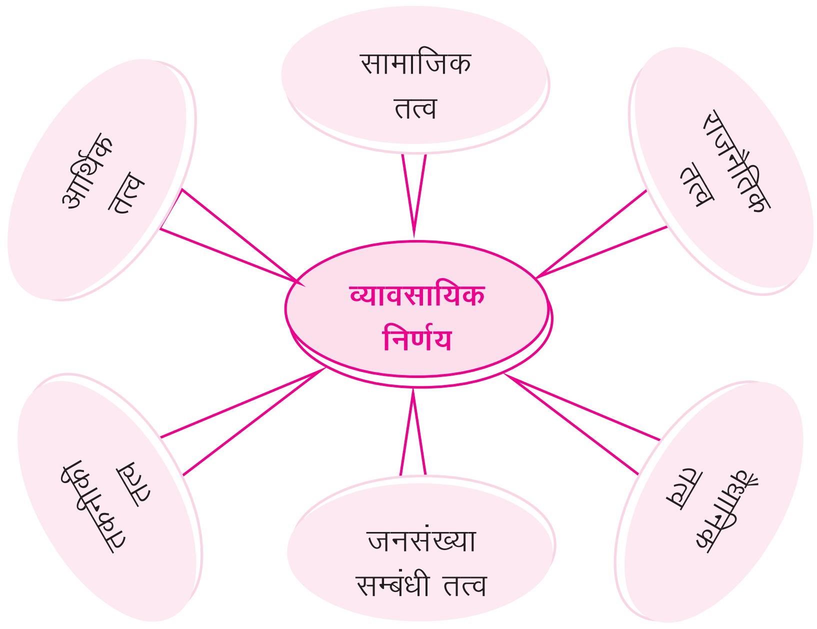

व्यावसायिक पर्यावरण शब्द से अभिप्राय उन बाह्य शक्तियों, तत्वों एवं संस्थाओं से हैं जो व्यवसाय के नियन्त्रण से बाहर हैं और व्यावसायिक उद्यम की कार्य–प्रणाली को प्रभावित करते हैं। इनमें ग्राहक, प्रतियोगी, आपूर्तिकर्ता, सरकार तथा सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक एवं तकनीकी तत्व सम्मिलित हैं। इनमें से कुछ तत्वों अथवा शक्तियों का व्यावसायिक इकाइयों पर प्रत्यक्ष प्रभाव होता है तो कुछ का अप्रत्यक्ष प्रभाव होता है। इस प्रकार व्यावसायिक पर्यावरण को ऐसे सम्पूर्ण वातावरण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है जिसका व्यवसाय की कार्य प्रणाली पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप में प्रभाव पड़ता है। इसे हम आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक, तकनीकी एवं जनसंख्या संबधी बाह्य तत्वों के एक ऐसे समूह के रूप में परिभाषित कर सकते हैं जो अनियन्त्रित प्रकृति के होते हैं एवं एक फर्म के व्यावसायिक निर्णयों को प्रभावित करते हैं।

टिप्पणी

3.1.1 व्यावसायिक पर्यावरण के लक्षण

उपरोक्त चर्चा के आधार पर व्यावसायिक पर्यावरण की विशेषताओं को संक्षेप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

(क) व्यावसायिक पर्यावरण उन सभी तत्वों का कुल योग है जो व्यावसायिक इकाई की कार्य प्रणाली को बाहर से बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

(ख) इसमें ग्राहक, प्रतियोगी, आपूर्तिकर्ता तथा सरकार जैसी शक्तियां एवं सामाजिक, सांस्कृतिक, तकनीकी एवं वैधानिक परिस्थितियां जैसे तत्व सम्मिलित हैं।

(ग) व्यावसायिक पर्यावरण प्रकृति से गतिशील होता है अर्थात् यह बदलता रहता है।

(घ) व्यावसायिक पर्यावरण में परिवर्तन का पूर्वानुमान नहीं लगाया जा सकता। भविष्य में क्या घटित होगा इसकी उचित प्रकृति का पता लगाना तथा आर्थिक एवं सामाजिक पर्यावरण में परिवर्तन का पूर्वानुमान लगाना अत्यन्त कठिन है।

(ङ) व्यावसायिक पर्यावरण एक स्थान से दूसरे स्थान, एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र तथा एक देश से दूसरे देश में अलग–अलग होता है। भारत की राजनैतिक परिस्थितियां पाकिस्तान की परिस्थितियों से भिन्न हैं। भारत एवं चीन के लोगों की रूचि एवं मूल्यों में भी भारी अन्तर है।

3.1.2 व्यावसायिक पर्यावरण का महत्व

व्यवसाय एवं उसके पर्यावरण में घनिष्ट एवं गहन सम्बन्ध होता है। यह व्यावसायिक इकाइयों को सुदृढ़ बनाने तथा उनके संसाधनों को प्रभावी ढंग से उपयोग करने में सहायक है। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, व्यावसायिक पर्यावरण के कई स्वरूप हैं, यह जटिल तथा गतिशील होता है तथा व्यवसाय के अस्तित्व एवं विकास पर इसका दूरगामी प्रभाव पड़ता है। अधिक स्पष्ट रूप में व्यवसाय के सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक एवं आर्थिक पर्यावरण की पर्याप्त समझ व्यवसाय की निम्न रूपों में सहायता करती है।

(क) **अवसरों एवं खतरों को पहचानना :** व्यवसाय एवं पर्यावरण का सम्बन्ध व्यवसाय के अवसरों को पहचानता है एवं खतरों को उजागर करता है। यह व्यावसायिक इकाइयों की चुनौतियों का सफलता पूर्वक सामना करने में सहायता करता है।

(ख) **विकास हेतु निर्देश देना :** व्यवसाय एवं पर्यावरण का सम्बन्ध व्यावसायिक इकाइयों के विकास को नई दिशाएं दिखाता है। इससे व्यवसाय अपनी क्रियाओं के विकास एवं विस्तार के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं।

(ग) **निरन्तर ज्ञान प्राप्त करना :** पर्यावरण-विश्लेषण से प्रबन्धकों का व्यावसायिक चुनौतियों का सामना करने का कार्य सरल हो जाता है। प्रबन्धकों को निरन्तर अभिप्रेरित किया जाता है कि वह अपने ज्ञान, समझ एवं कौशल को निरन्तर नवीनतम बनाएं रखें ताकि व्यावसायिक क्षेत्र में अनुमानित परिवर्तनों का सामना किया जा सके।

(घ) **व्यावसायिक छवि सुधारने में सहायक :** व्यावसायिक पर्यावरण व्यावसायिक संगठन को अपनी छवि सुधारने में सहायता करता है यदि वह उस पर्यावरण के प्रति संवेदनशील हों जिसमें वह कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, बिजली की कमी को देखते हुए कई कंपनियों ने अपनी बिजली की आवश्यकता की पूर्ति के लिए अपने कारखानों में स्वयं उत्पादित बिजली संयंत्र (Captive Power Plant) लगा लिए हैं।

(ङ) **प्रतियोगिता का सामना करना :** यह व्यावसायिक इकाइयों को प्रतियोगियों की रणनीति का विश्लेषण करने में तथा उनके अनुरूप अपनी रणनीतियां बनाने में सहायता करता है।

(च) **फर्म की शक्तियों एवं कमियों की पहचान करना :** तकनीकी एवं वैश्विक विकास को ध्यान में रखते हुए व्यावसायिक पर्यावरण प्रत्येक फर्म को अपनी शक्ति एवं कमियों की पहचान करने में सहायता करता है।

पाठगत प्रश्न 3.1

1. अपने शब्दों में 'व्यावसायिक पर्यावरण' शब्द को परिभाषित कीजिए।
2. नीचे दिये कथन, यदि गलत हैं, तो उनमें सुधार कीजिए।
   (क) व्यावसायिक पर्यावरण स्थिर प्रकृति का होता है।
   (ख) व्यावसायिक पर्यावरण में व्यावसायिक इकाई के बाह्य एवं आन्तरिक दोनों तत्व सम्मिलित होते हैं।
   (ग) व्यावसायिक पर्यावरण में परिवर्तनों का पूर्वानुमान लगाया जा सकता है।
   (घ) व्यावसायिक पर्यावरण व्यवसाय के लिए अवसरों की पहचान में सहायता करता है।

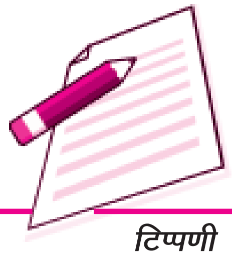

टिप्पणी

3.2 व्यावसायिक पर्यावरण के प्रकार

यदि व्यावसायिक पर्यावरण को अनियन्त्रित बाह्‌य तत्वों तक सीमित रखा जाये तो इसे (क) आर्थिक पर्यावरण, तथा (ख) अनार्थिक पर्यावरण में बांटा जा सकता है। आर्थिक पर्यावरण में देश की आर्थिक परिस्थितियां, आर्थिक नीतियां एवं आर्थिक प्रणालियां सम्मिलित हैं। अनार्थिक पर्यावरण में सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक, तकनीकी, जनसंख्या सम्बन्धी एवं प्राकृतिक पर्यावरण सम्मिलित हैं। इन सभी का फर्म की रणनीति पर प्रभाव पड़ता है और इन क्षेत्रों में यदि कोई परिवर्तन होता है तो उसका उनके परिचालन पर दूरगामी प्रभाव पड़ने की संभावना होती है। आइए, व्यावसायिक पर्यावरण के इन क्षेत्रों के सम्बन्ध में संक्षेप में जानें।

3.2.1 आर्थिक पर्यावरण

किसी भी व्यावसायिक उद्यम का अस्तित्व एवं उसकी सफलता पूरी तरह से उसके आर्थिक पर्यावरण पर निर्भर करती है। आर्थिक पर्यावरण को प्रभावित करने वाले प्रमुख तत्व इस प्रकार हैं:

(क) आर्थिक परिस्थितियां : किसी भी देश की आर्थिक परिस्थितियों से अभिप्राय उन आर्थिक तत्वों से है जिनका व्यावसायिक संगठन एवं उनके परिचालन पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इनमें सकल घरेलू उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय, वस्तु एवं सेवाओं के लिए बाजार, पूँजी की उपलब्धता, विदेशी मुद्रा भंडार, विदेशी व्यापार में वृद्धि, पूँजी बाजार की सुदृढ़ता आदि सम्मिलित हैं। यह सभी आर्थिक विकास की गति सुधारने में सहायता प्रदान करते हैं।

(ख) आर्थिक नीतियां : सभी व्यावसायिक गतिविधियां एवं परिचालन कार्य सरकार द्वारा समय–समय पर निर्धारित आर्थिक नीतियों द्वारा सीधे प्रभावित होते हैं। कुछ महत्वपूर्ण आर्थिक नीतियां इस प्रकार हैं :

1. औद्योगिक नीतियां
2. राजस्व नीतियां
3. मौद्रिक नीतियां
4. विदेशी निवेश नीतियां
5. आयात-निर्यात नीति (Exim Policy)

आर्थिक परिदृश्य, राजनैतिक औचित्य एवं आवश्यकताओं में परिवर्तन को ध्यान में रखते हुए सरकार इन नीतियों में समय–समय पर परिवर्तन करती रहती है। प्रत्येक व्यावसायिक इकाई को नीतिगत ढांचे के अन्तर्गत ही कार्य करना होता है और उसमें परिवर्तनों को स्वीकार करना होता है।

टिप्पणी

महत्वपूर्ण आर्थिक नीतियां

1. ***औद्योगिक नीति :*** *सरकार की औद्योगिक नीति के अन्तर्गत वे सिद्वान्त, नीतियां, नियम एवं कार्यविधियां आती हैं जो देश के औद्योगिक उद्यमों को निर्देशित एवं नियन्त्रित करती हैं तथा औद्योगिक विकास को एक स्वरूप प्रदान करती हैं।*

2. ***राजस्व नीति :*** *इसमें सरकार की सार्वजनिक व्यय, कर एवं सार्वजनिक ऋण की नीति सम्मिलित है।*

3. ***मौद्रिक नीति :*** *इसमें वह सभी क्रियाएं एवं हस्तक्षेप सम्मिलित हैं जिनका उद्देश्य व्यवसाय को आसानी से धन उपलब्ध कराना एवं व्यापार तथा उद्योग को बढ़ावा देना है।*

4. ***विदेशी निवेश नीति :*** *इस नीति का उद्देश्य औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने तथा आधुनिक तकनीक का लाभ उठाने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में विदेशी निवेश के प्रवाह का नियमन करना है।*

5. ***आयात-निर्यात नीति :*** *इसका उद्देश्य निर्यात को बढ़ाना एवं निर्यात व आयात के बीच की खाई को कम करना है। इस नीति के माध्यम से सरकार विभिन्न करों की घोषणा करती है। आजकल यह नीति बाधाओं एवं नियन्त्रण को दूर करने तथा सीमा शुल्क को कम करने पर अपना ध्यान केन्द्रित कर रही है।*

(ग) **आर्थिक प्रणाली :** विश्व अर्थव्यवस्था में मूलतः तीन प्रकार की आर्थिक प्रणालियाँ होती हैं। 1. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था 2. समाजवादी अर्थव्यवस्था एवं 3. मिश्रित अर्थव्यवस्था। भारत ने मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया है जिसमें सार्वजनिक क्षेत्र एवं निजी क्षेत्र दोनों में साथ–साथ कार्य किया जाता है।

3.2.2 अनार्थिक पर्यावरण

अनार्थिक पर्यावरण के विभिन्न तत्व इस प्रकार हैं :

(क) **सामाजिक पर्यावरण :** व्यवसाय के सामाजिक पर्यावरण में रीति–रिवाज, मूल्य, मान्यताएं, गरीबी, साक्षरता, अनुमानित आयु दर आदि सामाजिक तत्व सम्मिलित होते हैं। समाज का सामाजिक ढांचा एवं समाज द्वारा मान्य मूल्यों का व्यावसायिक इकाइयों के कार्य संचालन पर व्यापक प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, उत्सव के दिनों में नये कपड़ों, मिठाइयों, फल, फूल आदि की मांग में वृद्धि होती है। साक्षरता दर में वृद्धि के कारण उपभोक्ता उत्पादों की गुणवत्ता के प्रति अधिक सचेत होते जा रहे हैं। परिवार

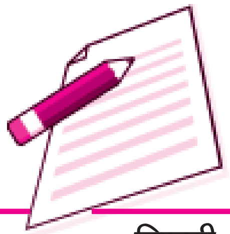

संरचना में परिवर्तन के कारण एक बच्चे की अवधारणा वाले परिवार अस्तित्व में आ रहे हैं। इससे कुछ अलग प्रकार के घरेलू सामान की मांग में वृद्धि हो रही है। ध्यान देने योग्य बात है कि विभिन्न सामाजिक ढांचे एवं संस्कृतियों से जुड़े लोगों के उपभोग के तरीकों, कपड़े पहनने एवं जीवन–शैली में बहुत अधिक भिन्नता आई है।

(ख) **राजनैतिक पर्यावरण :** इसमें राजनैतिक प्रणाली, सरकारी नीतियां, व्यवसाय समुदाय के प्रति दृष्टिकोण तथा श्रमसंघ सम्मिलित हैं। ये सभी पहलू व्यावसायिक इकाइयों द्वारा अपनाई जाने वाली रणनीति पर प्रभाव डालते हैं। स्थिर सरकार का भी व्यवसाय एवं उससे सम्बन्धित गतिविधियों पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। यह व्यवसाय में हित रखने वाले विभिन्न समूहों एवं निवेशकों को शक्ति एवं विश्वास का संदेश देता है। इसके साथ–साथ राजनैतिक पार्टी की विचारधारा भी व्यावसायिक संगठन एवं इसके परिचालन को प्रभावित करती है। आप जानते होंगे कि कोकाकोला, जो एक शीतल पेय है और आज भी बहुतायत में प्रयोग में आता है, को 70 के दशक के अन्त में अपने व्यवसाय को भारत से समेटना पड़ा था। साथ ही श्रमसंघों की गतिविधियां भी व्यावसायिक संगठनों के परिचालन को प्रभावित करती हैं। भारत में अधिकांश श्रम संगठन किसी न किसी राजनैतिक दल से जुड़े हैं। हड़ताल, तालाबंदी एवं श्रमिकों के विवाद आदि भी व्यावसायिक कार्यों पर विपरीत प्रभाव डालते हैं। लेकिन आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक व्यावसायिक पर्यावरण में श्रमसंघ परिपक्वता का प्रदर्शन कर रहे हैं तथा कर्मचारियों की प्रबन्ध में भागीदारी के माध्यम से व्यावसायिक संगठन की सफलता में सकारात्मक योगदान दे रहे हैं।

(ग) **कानूनी पर्यावरण :** इससे अभिप्राय कानून एवं नियमों के उस समूह से है जो व्यावसायिक संगठन एवं उनके परिचालन को प्रभावित करते हैं। प्रत्येक व्यावसायिक संगठन को कानून का पालन करना होता है तथा कानूनी ढांचे के अन्तर्गत कार्य करना होता है। व्यावसायिक उद्यम से सम्बन्धित महत्वपूर्ण अधिनियम इस प्रकार हैं :

1. कंपनी अधिनियम, 1956
2. विदेशी मुद्रा प्रबन्धन अधिनियम, 1999
3. कारखाना अधिनियम, 1948
4. औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1972
5. उपदान भुगतान अधिनियम, 1972
6. औद्योगिक विकास एवं नियमन अधिनियम, 1951
7. खाद्य मिलावट रोकथाम अधिनियम, 1954
8. आवश्यक वस्तु अधिनियम, 2002
9. तोल एवं माप मानक अधिनियम, 1956

टिप्पणी

10. एकाधिकार एवं प्रतिबंधित व्यापार व्यवहार अधिनियम, 1969
11. व्यापार चिन्ह अधिनियम, 1999
12. भारतीय मानक ब्यूरो अधिनियम, 1986
13. उपभोक्ता संरक्षण अधिनियम, 1986
14. पर्यावरण संरक्षण अधिनियम
15. प्रतियोगिता अधिनियम, 2002

उपर्युक्त अधिनियमों के साथ–साथ निम्न भी व्यवसाय के वैधानिक पर्यावरण के भाग हैं।

1. **संविधान में प्रावधान :** भारतीय संविधान के प्रावधान, विशेष रूप से निदेशात्मक सिद्धांत, नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य, केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों के वैधानिक अधिकार, इत्यादि भी व्यावसायिक इकाई के संचालन को प्रभावित करते हैं।

2. **न्यायिक निर्णय :** न्यायपालिका को यह सुनिश्चित करना होता है कि विधान–मंडल एवं सरकार सार्वजनिक हित में कार्य करें तथा संविधान द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्दर रहकर कार्य करें। व्यापार एवं उद्योग से जुड़े विभिन्न मामलों में भी न्यायालय द्वारा दिये गए निर्णय व्यावसायिक क्रियाओं को प्रभावित करते हैं।

(घ) **तकनीकी पर्यावरण :** तकनीकी पर्यावरण में वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन एवं उनके वितरण के लिए उपयोग में लाई गयी पद्धतियाँ, तकनीक एवं प्रणालियां सम्मिलित हैं। विभिन्न देशों के अलग–अलग तकनीकी पर्यावरण उत्पादों के डिज़ाइन पर प्रभाव डालते हैं। उदाहरण के लिए, अमेरिका एवं अन्य कई देशों में बिजली के उपकरण 110 वाल्ट के अनुसार बनाए जाते हैं। लेकिन यही जब भारत के लिए बनाए जाते हैं तो इनका 220 वाल्ट का होना आवश्यक है। आज के प्रतिस्पर्द्धात्मक युग में तकनीक में बड़ी तेजी से परिवर्तन आ रहा है। अतः बाजार में यदि टिके रहना है और विकास करना है तो व्यावसायिक इकाई को समय–समय पर तकनीकी परिवर्तनों को अपनाना होगा। ध्यान देने योग्य बात है कि अधिकांश बड़े औद्योगिक संगठनों में वस्तुओं एवं सेवाओं में सुधार एवं नव-प्रवर्तन लाने के लिए वैज्ञानिक अनुसंधान एक नियमित क्रिया है। वास्तव में कोई भी इकाई पुरानी तकनीक को अपनाकर आजकल अस्तित्व में नहीं रह सकती।

(ङ) **जनसंख्या सम्बन्धी पर्यावरण :** इसका अभिप्राय जनसंख्या के आकार, घनत्व, वितरण एवं बढ़ोतरी की दर से है। इन सभी तत्वों का विभिन्न वस्तुओं एवं सेवाओं की मांग पर सीधा प्रभाव पड़ता है। उदाहरण के लिए, एक देश जिसकी जनसंख्या दर ऊँची है तथा जनसंख्या का बड़ा भाग बच्चे हैं, वहां बच्चों के उत्पादों की मांग अधिक होगी। इसी प्रकार से शहरों एवं नगरों के लोगों की मांग ग्रामीण क्षेत्रों के लोगों की मांग से भिन्न होती है। जनसंख्या की दर में अधिक वृद्धि श्रमिकों की आसानी से उपलब्धता की

सूचक है। ये सब व्यावसायिक संगठनों को उत्पादन की श्रम-आधारित तकनीकों का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। इसी प्रकार कुछ क्षेत्रों में कुशल श्रम की उपलब्धता के कारण व्यावसायिक संगठन उन क्षेत्रों में ही अपनी इकाईयां स्थापित करने के लिए प्रेरित होते हैं। उदाहरण के लिए, कुशल श्रम शक्ति की उपलब्धता के कारण ही अमेरिका, कनाडा, आस्ट्रेलिया, जर्मनी, इंगलैंड की व्यावसायिक इकाइयाँ भारत में आ रही हैं। अतः वे व्यावसायिक इकाइयां जो जनसंख्या के आधार पर होने वाले परिवर्तनों पर निगाह रखती हैं तथा उसका सही रूप से अध्ययन करती हैं, वही अवसरों का लाभ उठा सकती हैं।

(च) **प्राकृतिक पर्यावरण :** प्राकृतिक पर्यावरण में भौगोलिक एवं परिस्थिति विज्ञान के वे तत्व सम्मिलित हैं जो व्यवसाय के परिचालन को प्रभावित करते हैं। इन तत्वों में प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता, मौसम एवं जलवायु की स्थिति, स्थानीय तत्व आदि सम्मिलित हैं। व्यवसाय प्राकृतिक वातावरण से अत्यधिक प्रभावित होते हैं। उदाहरण के लिए, चीनी मिलें केवल वहीं लगाई जाती हैं जहां गन्ना उगाया जा सकता है। विनिर्माण इकाई को कच्चे माल के स्रोतों के समीप स्थापित करना अच्छा माना जाता है। साथ ही सरकार की परिस्थिति विज्ञान एवं प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण सम्बन्धी नीतियां व्यावसायिक क्षेत्र पर अतिरिक्त उत्तरदायित्व डालती हैं।

पाठगत प्रश्न 3.2

1. आयात–निर्यात नीति का क्या अर्थ है?

2. निम्न मामलों में अनार्थिक पर्यावरण के विभिन्न प्रकारों की पहचान कीजिए:

   (क) त्योहारों के मौसम में नये वस्त्रों की मांग बढ़ जाती है।

   (ख) कम्प्यूटर ने टाइप राइटर को पुराना कर दिया है।

   (ग) कोकाकोला को आज भारतीय बाजार में स्वतन्त्रता पूर्वक बेचा जा रहा है।

   (घ) चीनी मिलों को उस क्षेत्र में स्थापित किया जाता है जहां गन्ना बहुतायत में पैदा होता है।

   (ङ) क्षेत्र विशेष में कुशल श्रम की उपलब्धता।

3.3 भारतीय अर्थव्यवस्था में पिछले वर्षों में हुए परिवर्तन

भारत में व्यवसाय के आर्थिक पर्यावरण में तीव्र गति से परिवर्तन मुख्यतः सरकार की आर्थिक नीतियों में परिवर्तन के कारण आ रहा है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय भारतीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि प्रधान तथा उसका औद्योगिक आधार काफी कमजोर था। औद्योगिक विकास को गति प्रदान करने एवं विभिन्न आर्थिक समस्याओं का समाधान करने के लिए सरकार ने

टिप्पणी

अनेक कदम उठाए जैसे कि कुछ वर्ग के उद्योगों पर सरकारी स्वामित्व, आर्थिक नियोजन, निजी क्षेत्र की भूमिका में कमी, आदि। सरकार ने निजी उद्योगों के कार्यों पर नियन्त्रण करने के लिए कई उपाय किये। इन सभी कदमों की मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। शुद्ध राष्ट्रीय उत्पाद, प्रति व्यक्ति आय एवं पूँजीगत वस्तुओं के क्षेत्र में एवं आधारभूत ढांचे के विकास में वृद्धि हुई। लेकिन औद्योगिक विकास की दर धीमी थी, मुद्रा स्फीति में वृद्धि हुई तथा सरकार को अस्सी के दशक में विदेशी मुद्रा की कमी का सामना करना पड़ा। परिणामस्वरूप भारत सरकार ने 1991 में आर्थिक नीतियों में आमूल-चूल परिवर्तन किया। नीति के अनुसार अधिकांश मामलों में औद्योगिक लाइसैंस प्रणाली को समाप्त कर दिया गया, अधिकांश उद्योग धन्धों में निजी क्षेत्र की भागीदारी की छूट दे दी गई। बहुत से सार्वजनिक क्षेत्र की औद्योगिक उद्यमों में विनिवेश की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई तथा बड़ी सीमा तक अर्थव्यवस्था में खुलापन लाया गया। भारत में विदेशी पूँजी को लाने के उद्देश्य से विदेशी निवेश प्रवर्तन बोर्ड की स्थापना की गई। अब हम इन परिवर्तनों को तीन शीर्षकों के अर्न्तगत चर्चा करेंगे। वे हैं (क) उदारीकरण (ख) निजीकरण, एवं (ग) वैश्वीकरण।

(क) उदारीकरण

उदारीकरण से अभिप्राय व्यावसायिक उद्यमों के सुगम संचालन पर लगे अनावश्यक नियन्त्रण एवं रुकावटों को समाप्त करने की प्रक्रिया है। इसमें निम्नलिखित सम्मिलित हैं:

(i) अधिकांश उद्योग धन्धों में औद्योगिक लाइसैंस की आवश्यकता को समाप्त करना,

(ii) व्यावसायिक क्रियाओं के स्तर के सम्बन्ध में निर्णय लेने की स्वतन्त्रता,

(iii) वस्तु एवं सेवाओं के मूल्य निर्धारण की स्वतन्त्रता,

(iv) आयात एवं निर्यात की प्रक्रिया को सरल बनाना,

(v) कर की दरों में कमी, एवं

(vi) भारत में विदेशी पूँजी एवं तकनीक को आकर्षित करने के लिए सरल नीतियां।

इस उदारीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से भारतीय अर्थव्यवस्था में खुलापन आया तथा अब इसका बड़े पैमाने पर विश्व के साथ आदान–प्रदान प्रारम्भ हो गया है। इसके कारण विदेशी व्यावसायिक संगठनों का भारत में प्रवेश सरल हो गया है। इससे प्रतियोगिता एवं कार्य कुशलता में और अधिक वृद्धि हो गई। वस्तुतः उदारीकरण से अर्थव्यवस्था में ऊँची विकास की दर, वस्तुओं की प्रतिस्पर्द्धात्मक मूल्यों पर उपलब्धता, मजबूत स्टाक बाजार, बड़ी मात्रा में विदेशी विनियम भंडार, नीची मुद्रा स्फीति की दर, रुपये में मजबूती, अच्छे औद्योगिक सम्बन्ध आदि के रूप में परिवर्तन आए।

(ख) निजीकरण

निजीकरण से अभिप्राय अधिकांश क्रियाओं में निजी क्षेत्र को सम्मिलित कर सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करना है। 1991 में नीतियों में सुधार की घोषणा के साथ सार्वजनिक

क्षेत्र का विस्तार लगभग थम चुका है तथा उदारीकरण के बाद के समय से निजी क्षेत्र में तेजी से वृद्धि हुई है। निजीकरण में निम्नलिखित बातें सम्मिलित हैं –

(i) सार्वजनिक क्षेत्र के लिये आरक्षित उद्योग धन्धों की संख्या को 17 से घटाकर 8 करना (जिसे बाद में और घटा कर 3 कर दिया गया) तथा आरक्षित क्षेत्र में भी चुनिंदा प्रतियोगिता को प्रारम्भ करना।

(ii) संसाधन जुटाने तथा व्यवसाय के स्वामित्व में जन साधारण और कर्मचारियों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए कुछ चुनिंदा सार्वजनिक क्षेत्र के औद्योगिक संगठनों में अंशों का विनिवेश करना।

(iii) समझौता–पत्र प्रणाली (MOU) द्वारा प्रबन्ध को और अधिक स्वायत्तता प्रदान कर के उन्हें कुछ विशिष्ट परिणामों के लिए उत्तरदायी ठहरा कर इनके निष्पादन में सुधार लाना।

उपर्युक्त उठाए गये कदमों के परिणामस्वरूप भारत में उदारीकरण के पश्चात् व्यवसाय के निजी क्षेत्र का भारी विस्तार हुआ है।

(ग) वैश्वीकरण

वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थव्यवस्था को विश्व–अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत कर देना। इसका अर्थ है राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं एवं सेवाओं, पूँजी, तकनीकी एवं श्रम का प्रवाह। वैश्वीकरण के इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सरकार ने अनेकों कदम उठाए। जैसे कि सीमा शुल्क में कमी, निर्यात एवं आयात पर से मात्रा सम्बन्धी एवं कोटा प्रतिबंध को हटा देना, विदेशी निवेश को सुगम बनाना तथा विदेशी तकनीक को प्रोत्साहित करना। इन उपायों से उच्च विकास दर, रोजगार के अवसरों में वृद्धि एवं क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने जैसे लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास किया गया।

(घ) व्यवसायिक पर्यावरण

व्यवसाय एवं उद्योग पर सरकारी नीतियों में परिवर्तन का प्रभाव (उदारीकरण, निजीकरण एवं वैश्वीकरण के विशेष सन्दर्भ में) (Impact of government policy changes on business and industry with special reference to liberalisation, privatisation and globalisation)

1. **तकनीकी वातावरण में तीव्र परिवर्तन :** नवीन औद्योगिक नीति के लागू होने के बाद विश्व तकनीक को लागू करने के लिए कम्पनियों पर दबाव बनाया गया।

टिप्पणी

2. **अधिक माँग वाले उपभोक्ता :** सरकारी नीतियों में परिवर्तन से पूर्व, उपभोक्ता वस्तुओं एवं सेवाओं को बिना अधिक पूछताछ के क्रय कर लेते थे। किन्तु वर्तमान दिनों में उपभोक्ता की मांग के अनुसार उत्पादन किया जाता है। उपभोक्ताओं ने अब अच्छी किस्म की वस्तुओं एवं सेवाओं को लेना प्रारम्भ कर दिया है।

3. **प्रतिस्पर्धा में वृद्धि :** आज भारतीय कम्पनियों को केवल आन्तरिक बाजार की प्रतिस्पर्धा का ही सामना नहीं करना पड़ता, बल्कि बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की प्रतिस्पर्धा का सामना भी करना पड़ता है। यदि कम्पनियाँ प्रतिस्पर्धा का सामना नहीं कर सकती तो वे बाजार से बाहर हो जायेंगी।

4. **परिवर्तन आवश्यक :** सरकारी नीतियों में परिवर्तन से पूर्व व्यापार अधिक स्थिर थे। जो नीतियाँ बनाई जाती थीं वह अधिक समय तक चलती थी। आजकल समय–समय पर व्यवसायिक उपक्रम अपनी नीतियों में परिवर्तन करते रहते हैं।

5. **मानव संसाधन के विकास के लिए आवश्यकता :** सरकारी नीतियों में परिवर्तन से पूर्व कम्पनियां अपर्याप्त प्रशिक्षित कर्मचारियों से कार्य पूरा करातीं थीं। नवीन बाजार परिस्थितियों ने प्रशिक्षित एवं योग्य कर्मचारियों की आवश्यकता पर बल दिया। अतः भारतीय कम्पनियों ने कुशल मानव विकास पर बल दिया।

पाठगत प्रश्न 3.3

1. वैश्वीकरण का क्या अर्थ है?

2. उदारीकरण के लिए 'उ', निजीकरण के लिए 'नि' तथा वैश्वीकरण के लिए 'वै' लिखें:

   (क) वस्तुओं एवं सेवाओं के मूल्य निर्धारण में स्वतन्त्रता

   (ख) सार्वजनिक क्षेत्र के औद्योगिक उद्यमों के शेयरों का विनिवेश

   (ग) बिक्री कर की दर में कमी

   (घ) सीमा शुल्क में कमी

   (ङ) सार्वजनिक क्षेत्र के लिए आरक्षित उद्योगों की संख्या में कमी

3.4 व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व

प्रत्येक व्यावसायिक संगठन समाज का एक अभिन्न अंग है। यह अपने अस्तित्व को बनाए रखने तथा विकास के लिए समाज के सीमित संसाधनों का प्रयोग करता है। अतः यह महत्वपूर्ण है कि व्यवसाय की कोई भी क्रिया समाज के दीर्घ कालीन हितों के लिये घातक न हो। लेकिन व्यवहार में यह देखा गया है कि व्यवसाय के कुछ पक्ष समाज के लिये

अवांछित हैं जैसे कि पर्यावरण को दूषित करना, करों की चोरी करना, मिलावटी उत्पादों का क्रय–विक्रय करना, भ्रामक विज्ञापन देना, आदि। इसके परिणामस्वरूप ही व्यवसाय की सामाजिक उत्तरदायित्व की अवधारणा का विकास हुआ जिसके अनुसार व्यवसाय के स्वामी एवं प्रबन्धकों को समुदाय, ग्राहकों व कर्मचारियों आदि के प्रति अपने उत्तरदायित्वों के लिए सचेत करना है।

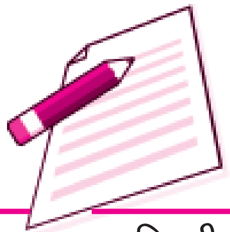

टिप्पणी

3.4.1 सामाजिक उत्तरदायित्व की आवधरणा

व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है कि व्यवसाय समाज के सर्वोत्तम हित में कार्य करे। सामाजिक उत्तरदायित्व विधिक उत्तरदायित्व से भिन्न होता है। कानूनी उत्तरदायित्व को इसलिए निभाया जाता है, क्योंकि कानून में प्रावधान होता है तथा उसका भय होता है। लेकिन सामाजिक उत्तरदायित्व व्यवसाय के समाज की आवश्यकता को पूरा करने के लिए स्वेच्छा से प्रयत्न में सहायक होते हैं। सामाजिक उत्तरदायित्वों को पूरा कर व्यवसाय इस प्रकार का वातावरण तैयार करता है कि इसको सफलता प्राप्त हो।

सामाजिक उत्तरदायित्व की आवश्यकता

व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व निम्न कारणों से आवश्यक है :

1. **स्वयं का हित :** समाज की आवश्यकताओं को पूरा करने से व्यवसाय को दीर्घ अवधि में सफलता मिल जाती है। जिन लोगों को अच्छा पर्यावरण, शिक्षा एवं अवसर प्राप्त होते हैं, वे व्यवसाय के अच्छे कर्मचारी, ग्राहक एवं पड़ोसी बन सकते हैं।
2. **सामाजिक शक्ति का संतुलन :** व्यवसाय के निर्णय एवं उसके कार्य उपभोक्ता, कर्मचारी, पर्यावरण एवं समुदाय को प्रभावित करते हैं, इसीलिए इसके पास सामाजिक शक्ति है। इसकी सामाजिक शक्ति एवं दायित्वों में संतुलन नहीं होता। व्यवसाय अपनी शक्ति को उपभोक्ता, कर्मचारी, पर्यावरण एवं समुदाय के विरूद्ध प्रयोग कर सकता है।
3. **समाज का निर्माण :** व्यवसाय समाज द्वारा प्रदत्त संसाधनों का उपयोगकर्ता है तथा यह समाज की कृति है, इसलिए इसे संसाधनों को लोगों के हित के लिए उपयोग करना चाहिए। सफल व्यवसाय एक खुशहाल एवं संतुष्ट समुदाय एवं कर्मचारियों का निर्माण कर सकता है।
4. **सामाजिक जागृति :** आजकल उपभोक्ताओं को विभिन्न उत्पादों की गुणवत्ता एवं बाजार मूल्य तथा उनकी आपूर्ति करने वाली साख वाली कम्पनियों के सम्बन्ध में ज्ञान होता है। इसलिए व्यवसाय को उनके साथ उचित व्यवहार करना चाहिए। अन्यथा वह लोग संगठित हो जाएंगे तथा उपभोक्ता संगठन बना लेंगे। इससे व्यवसाय सामाजिक उत्तरदायित्वों को निभाने के लिए बाध्य हो जाएगा।
5. **सार्वजनिक छवि :** यदि व्यवसाय सामाजिक दायित्वों का निर्वाह करता है तो उसकी लोगों में छवि अच्छी होगी। जन साधारण में व्यवसाय की साख होगी अन्यथा व्यवसाय एवं समाज में विरोध उत्पन्न होगा।

टिप्पणी

6. **नैतिक औचित्य :** प्रत्येक व्यवसायिक संगठन समाज के मानवीय एवं भौतिक संसाधन एवं पूंजी का उपयोग करता है। सड़क, बिजली एवं पानी का विभिन्न व्यावसायिक फर्में उपयोग करती हैं। व्यावसायिक इकाइयों के उत्पाद का समाज को विक्रय किया जाता है। इसलिए समाज की भलाई में योगदान व्यवसाय का नैतिक उत्तरदायित्व बन जाता है।

3.4.2 विभिन्न वर्गों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व

यह ध्यान रहे कि जो लोग व्यवसाय का प्रबन्ध करते हैं उनके उत्तरदायित्व स्वामियों तक ही सीमित नहीं हो सकते। उन्हें व्यवसाय में हित रखने वाले अन्य व्यक्तियों जैसे कि कर्मचारी, उपभोक्ता, सरकार, समुदाय एवं जनसाधारण की आकांक्षाओं को भी ध्यान में रखना होगा। आइए, इन सभी वर्गों के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्वों पर नजर डालें।

(क) **अंशधारियों अथवा स्वामियों के प्रति उत्तरदायित्व :** अंशधारी अथवा स्वामी वे व्यक्ति होते हैं जो व्यवसाय में धन लगाते हैं। उन्हें उनकी पूँजी पर उचित प्रतिफल/लाभ मिलना चाहिए। आप जानते हैं कि कंपनियों में यह प्रतिफल लाभांश के रूप में होता है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि लाभांश की दर निहित जोखिम तथा अर्जित लाभ के अनुरूप हो। लाभांश के अतिरिक्त अंशधारी यह भी आशा करते हैं कि अंशों के मूल्यों में वृद्धि होगी और यह मूलतः कम्पनी के निष्पादन के द्वारा निर्धारित होता है।

व्यवसाय के लिए आवश्यक धन को निवेशक उपलब्ध कराते हैं। स्वामियों/निवेशकों के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं:

1. निवेश को सुरक्षित सुनिश्चित करना।
2. वित्तीय पक्ष के सम्बन्ध में नियमित, सही एवं पर्याप्त जानकारी देना।
3. उचित एवं नियमित लाभांश देना।
4. पूंजी में वृद्धि सुनिश्चित करना।
5. व्यवसाय की सम्पत्तियों की रक्षा करना।

(ख) **कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व :** प्रत्येक व्यावसायिक संगठन को कार्य की प्रकृति तथा बाजार में प्रचलित दर के आधार पर कर्मचारियों को उचित मजदूरी या वेतन सुनिश्चित करना चाहिए। कार्य की दशाएं तथा स्थितियां जैसे सुरक्षा, चिकित्सा सुविधाओं, जलपान गृह, रहने के मकान, छुट्टियों तथा सेवा–निवृति लाभों आदि के दृष्टिकोण से अच्छी होनी चाहिए। व्यवसाय के लाभ के आधार पर उन्हें उचित बोनस भी मिलना चाहिए। प्रयत्न करने चाहिए कि प्रबन्ध में उनकी भागीदारी का भी प्रावधान हो।

बिना कर्मचारियों के कोई भी व्यवसाय अस्तित्व में नहीं रह सकता। उनका मस्तिष्क, प्रयत्न, कुशाग्रता एवं विशेषज्ञता व्यावसायिक इकाइयों को सफलता दिलाती हैं। अपने कर्मचारियों के प्रति व्यवसाय के दायित्व निम्न हैं :

1. उचित मजदूरी एवं वेतन देना।
2. कार्मिकों के अच्छे स्वास्थ्य के लिए अच्छी कार्य परिस्थितियां बनाए रखना।
3. गृह, स्वास्थ्य सम्बन्धि, मनोरंजन आदि की सेवाएं प्रदान करना।
4. लगाव की भावना को विकसित करना।
5. व्यवसाय श्रेष्ठ मानवीय सम्बन्धों का निर्माण कर कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करना।

(ग) **उपभोक्ताओं के प्रति उत्तरदायित्व :** प्रत्येक व्यावसायिक संगठन को उपभोक्ताओं को उचित मूल्य पर उत्तम गुणवत्ता वाली वस्तुओं एवं सेवाओं की आपूर्ति करनी चाहिए। इन्हें मिलावट, घटिया पैकेजिंग, गुमराह करने वाले एवं झूठे विज्ञापनों से बचना चाहिए तथा ग्राहकों की शिकायतों को दूर करने की उचित व्यवस्था करनी चाहिए।

व्यवसायी जिन उत्पादों का उत्पादन करता है, उनका उपयोग उपभोक्ता करते हैं। उपभोक्ता के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्व निम्नलिखित हैं :

1. वस्तुओं तथा सेवाओं की नियमित आपूर्ति सुनिश्चित करना।
2. वस्तुओं को उचित मूल्य पर प्रदान करना।
3. विभिन्न वर्ग समूहों के उपभोक्ताओं की आवश्कताओं की पूर्ति करने वाली वस्तुएं उपलब्ध कराना।
4. मानक गुणवत्ता वाली वस्तुएं उपलब्ध कराना।
5. यह सुनिश्चित करना कि विज्ञापन सत्य हों।
6. तुरन्त एवं लगातार सेवाएँ प्रदान करना।

(घ) **समाज के प्रति उत्तरदायित्व :** प्रत्येक व्यवसाय हमारे समाज का अभिन्न अंग होता है। अतः व्यवसाय को भी समाज के कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए। इसे सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों के सरंक्षण व संवर्धन के लिए कार्य करना चाहिए, रोजगार के अवसर उत्पन्न करने चाहिए तथा समाज के कमजोर वर्ग के उत्थान के लिए कार्य करना चाहिए। इसे समाज के भौतिक एवं परिस्थिति–विज्ञान सम्बन्धी पर्यावरण के संरक्षण के लिए उचित कदम उठाने चाहिए। इसे जन स्वास्थ्य सुरक्षा, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि जैसे सामुदायिक विकास कार्यक्रमों में भी योगदान देना चाहिए।

व्यवसाय को समुदाय के लिए कार्य करना चाहिए। जनसाधारण के प्रति व्यवसाय के दायित्व इस प्रकार से हैं :

1. प्रदूषण से पर्यावरण की रक्षा करना।
2. अच्छे रोजगार के अवसर प्रदान करना।
3. सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षण देना।

टिप्पणी

4. समाज के कमजोर वर्ग जैसे कि विकलांग, विधवाएं, अनुसूचित जाति आदि की सहायता करना।
5. राष्ट्रीय एकता का प्रवर्तन करना।

(ड.) सरकार के प्रति उत्तरदायित्व : प्रत्येक व्यावसायिक उद्यम को व्यवसाय प्रारम्भ करते समय सरकार के दिशा–निर्देशों का पालन करना चाहिए। इसे व्यवसाय का संचालन कानून के अनुसार करना चाहिए तथा करों का ईमानदारी से व समय पर भुगतान करना चाहिए। इसे कभी भी भ्रष्टाचार एवं गैर कानूनी कार्यों/क्रियाओं में लिप्त नहीं होना चाहिए।

सरकार के प्रति व्यवसाय के दायित्व निम्नलिखित हैं :

1. देश के कानूनों का पालन करना।
2. ईमानदारी से एवं समय पर करों का भुगतान।
3. सरकारी कर्मचारियों को भ्रष्ट करने से बचना।
4. आर्थिक शक्ति का केन्द्रीकरण एवं एकाधिकार की प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करना।
5. विदेशी व्यापार में लेनदेन में ईमानदारी।

विभिन्न वर्गों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्वों के महत्व को देखते हुए यह अधिक श्रेयस्कर होगा कि कम्पनी अधिनियम में कम्पनियों द्वारा अपनी वार्षिक रिपोर्ट में सामाजिक कार्यों की रिपोर्ट देने का प्रावधान भी किया जाए। फिर भी कुछ बड़ी कंपनियां स्वेच्छा से अपनी वार्षिक रिपोर्ट में नियमित रूप से अपने द्वारा किए गए सामाजिक कार्यों की रिपोर्ट दे रही हैं। इनमें से प्रमुख हैं सीमेन्ट कार्पोरेशन ऑफ इन्डिया, इन्डियन ऑयल कारपोरेशन, टाटा आयरन एण्ड स्टील कम्पनी, एशियन पेंट्स तथा आई. टी. सी.। इन रिपोर्टों से स्पष्ट होता है कि कम्पनियां पर्यावरण मित्र बन रही हैं तथा समाज के विकास में अपनी भूमिका के प्रति जागरुक हैं।

3.4.3 व्यवसाय एवं पर्यावरण संरक्षण

पौधों एवं पशुओं का स्वास्थ्य उस पर्यावरण की गुणवत्ता पर निर्भर करता है, जिसमें वह रहते हैं। तेजी से हो रहे औद्योगीकरण ने पर्यावरण को बहुत क्षति पहुंचाई है। बड़ी संख्या में कारखानों एवं कर्मचारियों के लिए आवासों के निर्माण के कारण जंगल का जीवन तेजी से घट रहा है। इसके कारण वायु, ध्वनि एवं जल प्रदूषण में वृद्धि हुई है। सरकारों ने प्रदूषण को रोकने के लिए कानून बनाए हैं। केन्द्रीय एवं राज्य सरकारों ने प्रदूषण नियंत्रण बोर्डों की स्थापना की है।

पर्यावरण प्रदूषण के कारण

पर्यावरण प्रदूषण के निम्न कारण हैं :

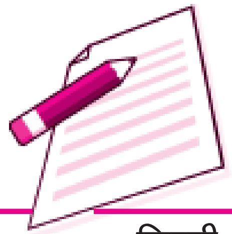

1. **वायु प्रदूषण :** वायु प्रदुषण उन कारकों का परिणाम है जो वायु की गुणवत्ता को कम करते हैं। वाहनों द्वारा कार्बन छोड़ने से वायु प्रदूषण होता है।

2. **जल प्रदूषण :** कारखानों से जो रसायन कूड़ा निकलता है, वह प्रत्येक देश में जल प्रदूषण करता है। प्लास्टिक के थैले, जिनमें फल एवं अन्य सामान भरा होता है, बोतलें आदि हमारी नदियों, झरनों एवं झीलों को प्रदूषित करते हैं।

3. **भूमि प्रदूषण :** खेती में कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने हमारी पवित्र भूमि को क्षति पहुंचाई है। लोग खरीदारी करने जाते हैं तथा प्लास्टिक के थैलों में सामान खरीदते हैं। इन थैलों को वह इधर–उधर फेंक देते हैं, जिससे भूमि प्रदूषण होता है।

4. **ध्वनि प्रदूषण :** कारखानों का चलाना ध्वनि प्रदूषण का कारण है। वाहन भी ध्वनि प्रदूषण का कारण हैं। ध्वनि प्रदूषण से मस्तिष्क में गड़बड़ी, बहरापन, हृदय का सही कार्य न करना आदि हो सकता है।

प्रदूषण नियंत्रण की आवश्यकता

प्रदूषण नियंत्रण निम्न कारणों से आवश्यक है :

1. सुरक्षा के खतरे को कम करना एवं जीवन की सुरक्षा को सुनिश्चित करना।
2. लोगों को क्षतिपूर्ति के भुगतान के जोखिम को कम करना।
3. जन साधारण के स्वास्थ्य को संरक्षण देना।
4. जल प्रदूषण, जो मछलियों एवं अन्य जल वनस्पति को प्रभावित करता है, मानवीय स्वास्थ्य को जोखिम जैसे कि सांस लेने में कठिनाई, आंखों में खुजली आदि जैसी समस्याओं को कम करता है।
5. भूमि एवं मशीनों की सफाई की लागत में कमी।

3.5 व्यावसायिक नैतिकता

व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है व्यवसाय के समाज के दृष्टिकोण से उचित व्यवहार। अर्थात् नैतिकता के वे सिद्धान्त जिनका व्यवसाय को पालन करना चाहिए। व्यावसायिक नैतिकता का सम्बन्ध यह निर्धारण करने से है कि व्यवसाय करते समय क्या सही अथवा क्या गलत है। नैतिकता से हमारा अभिप्राय व्यवसाय के उन कार्यों से है, जिनकी समाज के दृष्टिकोण से आवश्यकता है।

नैतिक व्यवसाय कार्यों के कुछ उदाहरण हैं :

1. ग्राहक से सही मूल्य की वसूली।
2. वस्तुओं की सही माप तोल।

3. सरकार को सही एवं समय पर कर का भुगतान।
4. जनता को सुरक्षित वस्तुओं की आपूर्ति सुरक्षित करना।
5. कर्मचारियों के साथ उचित व्यवहार।
6. अनुचित व्यापार व्यवहार, गलत आचरण, कालाबाजारी एवं जमाखोरी में लिप्त न रहना।

3.5.1 व्यवसाय नैतिकता के तत्व

व्यवसाय नैतिकता के तत्व निम्न हैं :

1. व्यवसाय नैतिकता के कारण व्यवसायिक फर्में स्वयं के अनुशासन में रहती हैं।
2. व्यवसाय नैतिकता व्यवसाय में ईमानदारी एवं उत्तरदायित्व पूर्णता लाती है।
3. व्यवसाय नैतिकता का उद्देश्य सभी ग्राहकों, कर्मचारियों आपूर्तिकर्ता आदि के साथ सही एवं उचित व्यवहार करना है।
4. व्यवसाय नैतिकता कानून के साथ–साथ कार्य करती है, जिससे जीवन में सम्पूर्णता लाने में सहायता मिलती है।
5. व्यवसाय नैतिकता उन सभी व्यावसायिक कार्यों में निहित होती है, जो समाज के दृष्टिकोण से आवश्यक हैं।

पाठगत प्रश्न 3.4

1. व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ बताइए।
2. उन समूहों की पहचान कीजिए जिनके प्रति निम्नलिखित कथन व्यवसाय का उत्तरदायित्व स्पष्ट करते हैं :

   (क) जब संगठन समय पर करों का भुगतान करता है।

   (ख) जब कम्पनी अच्छी गुणवत्ता की वस्तुओं का उत्पादन करती है तथा उन्हें उचित मूल्य पर बेचती है।

   (ग) जब कम्पनी किसी विशेष क्षेत्र के लोगों के लिए खेलों का आयोजन करती है।

   (घ) जब कम्पनी उंची दर से लाभांश घोषित करती है।

   (ङ) जब संगठन अपने कर्मचारियों को उपयुक्त चिकित्सा सुविधाएं प्रदान करता है।
3. बहु–विकल्पीय प्रश्न

   क) निम्न में से व्यवसाय के नैतिक व्यवहारों की पहचान कीजिए :

   अ) कर्मचारियों का शोषण ब) मिलावटी खाद्य सामग्री का विक्रय

   स) उपभोक्ताओं से लेनदेन में ईमानदारी द) नकली माल की बिक्री

ख) निम्न में से कौन सा कार्य नैतिक नहीं है :

अ) व्यवसाय द्वारा कर का तुरन्त भुगतान

ब) माल की बिक्री पर ठीक माप तोल

स) काला बाजारी

द) कर्मचारियों को उचित मजदूरी

आपने क्या सीखा

- व्यावसायिक पर्यावरण शब्द उन बाह्य शक्तियों, तत्वों एवं संस्थाओं के लिए प्रयुक्त होता है जो व्यवसाय के नियन्त्रण के बाहर हैं तथा व्यवसाय के कार्य संचालन को प्रभावित करते हैं। इनमें ग्राहक, प्रतियोगी, आपूर्तिकर्ता, सरकार तथा सामाजिक, राजनैतिक, वैधानिक एवं तकनीकी तत्व सम्मिलित हैं। व्यावसायिक पर्यावरण के अनेक स्वरूप हैं तथा यह प्रकृति से जटिल एवं प्रगतिशील है। व्यावसायिक पर्यावरण में परिवर्तनों का पूर्वानुमान सम्भव नहीं है। व्यावसायिक पर्यावरण अलग–अलग स्थान, क्षेत्र एवं देशों में अलग–अलग होता है।

- **व्यावसायिक पर्यावरण का महत्व :** व्यवसाय एवं पर्यावरण का सम्बन्ध व्यवसाय के अवसरों को पहचानना है तथा उसके खतरों को उजागर करना है। यह व्यावसायिक इकाइयों को विकास के नये अवसर प्रदान करता है। पर्यावरण विश्लेषण व्यावसायिक चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए प्रबन्धकों के कार्य को सरल बनाता है। यह फर्मों को प्रतियोगियों की रणनीति का विश्लेषण करने तथा अपनी शक्तियों एवं कमियों को ध्यान में रखते हुए उसी के अनुसार अपनी स्वयं की रणनीति तैयार करने में सहायता करता है।

- व्यावसायिक पर्यावरण के प्रकार :

  (क) आर्थिक पर्यावरण : (i) आर्थिक परिस्थितियां; (ii) आर्थिक नीतियां; (iii) आर्थिक प्रणाली

  (ख) अनार्थिक पर्यावरण : (i) सामाजिक पर्यावरण; (ii) राजनैतिक पर्यावरण; (iii) कानूनी पर्यावरण; (iv) तकनीकी पर्यावरण; (v) जनसंख्या सम्बन्धी पर्यावरण; (vi) प्राकृतिक पर्यावरण

- भारतीय अर्थव्यवस्था में पिछले कुछ वर्षों में हुए परिवर्तन :

  (क) उदारीकरण : उदारीकरण से अभिप्राय व्यावसायिक उद्यम के सुगम संचालन में अपनाए जाने वाले अनावश्यक नियन्त्रण एवं अवरोधों को दूर करने की प्रक्रिया से है।

टिप्पणी

(ख) निजीकरण : निजीकरण से आशय अधिकांश क्रियाओं में निजी क्षेत्र को सम्मिलित कर, सार्वजनिक क्षेत्र की भूमिका को कम करना है।

(ग) वैश्वीकरण : वैश्वीकरण का अर्थ है किसी देश की अर्थ व्यवस्था का विश्व अर्थव्यवस्था के साथ एकीकरण। इसका अर्थ है राष्ट्रीय सीमाओं के पार वस्तुओं एवं सेवाओं, पूँजी, तकनीक एवं श्रम का स्वतन्त्र प्रवाह।

- **व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व :** व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व से तात्पर्य व्यावसायिक उद्यम द्वारा ऐसी नीतियों एवं योजनाओं के अपनाने से है जो समाज की आकांक्षाओं, मूल्यों एवं हितों के अनुरूप हैं। यह सुनिश्चित करता है कि व्यवसाय के निर्णयों एवं नीतियों से व्यवसाय के विभिन्न वर्गों के हित विपरीत रूप से प्रभावित नहीं है।

- **विभिन्न समूहों के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्व :**

  (क) अंशधारियों अथवा स्वामियों के प्रति उत्तरदायित्व

  (ख) कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व

  (ग) उपभोक्ताओं के प्रति उत्तरदायित्व

  (घ) सरकार के प्रति उत्तरदायित्व

  (ङ) समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व

- **व्यावसायिक नैतिकता :** व्यावसायिक नैतिकता ऐसे सदाचरण के सिद्धांत हैं जो समाज के सम्बन्ध में व्यवसायियों के व्यवहार अथवा व्यावसायिक क्रियाओं को दिशा प्रदान करते हैं। यह नैतिक रूप से उचित व्यवसाय चलाने के लिए आचार संहिता प्रदान करता है।

- सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है व्यवसाय का समाज के हितों को ध्यान में रखना।

- सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्ष में तर्क हैं– स्वयं का हित, सामाजिक शक्ति में संतुलन, समाज में जागरूकता, सार्वजनिक छवि एवं नैतिकता का औचित्य।

- व्यवसाय के निवेशकों के प्रति उत्तरदायित्व हैं: निवेश की सुरक्षा, सही सूचना प्रदान करना, उचित लाभांश देना एवं व्यवसाय की सम्पत्तियों को सुरक्षित रखना।

- व्यवसाय के उपभोक्ता के प्रति उत्तरदायित्वः वस्तुओं की नियमित आपूर्ति, उचित मूल्य पर वस्तुएं उपलब्ध कराना, विभिन्न समूहों की आवश्यकताओं की पूर्ति की वस्तुएं उपलब्ध कराना, मानक गुणवत्ता की वस्तुएं उपलब्ध कराना।

- कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व : उचित मजदूरी/वेतन देना, अच्छी कार्य परिस्थितियों का निर्माण, आवास एवं मनोरंजन सुविधा प्रदान करना, कर्मचारियों का सहयोग प्राप्त करना।

- सरकार के प्रति उत्तरदायित्व : करों का तुरन्त भुगतान, भ्रष्टाचार से बचना, विदेशी व्यापार में सही व्यवहार एवं आर्थिक शक्ति की प्रवृत्ति को हतोत्साहित करना।
- समुदाय के प्रति उत्तरदायित्व : पर्यावरण संरक्षण और श्रेष्ठ रोजगार के अवसर, सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को संजोकर रखना, समाज के कमजोर वर्गों की सहायता करना एवं राष्ट्रीय एकता का प्रवर्तन।
- पर्यावरण प्रदूषण के कारण हैं : वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, भूमि प्रदूषण एवं ध्वनि प्रदूषण।
- व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है : व्यावसायियों का नैतिक आचरण।
- व्यावसायिक नैतिकता के तत्व हैं : अनुशासन, ईमानदारी, उचित व्यवहार, जीवन में समुच्चयता एवं आशानुकूल व्यावसायिक क्रियाएं।

मुख्य शब्द

व्यावसायिक नैतिकता	जनसंख्या सम्बन्धी पर्यावरण	आर्थिक पर्यावरण
आर्थिक नीति	वैश्वीकरण	वैधानिक पर्यावरण
उदारीकरण	प्राकृतिक पर्यावरण	राजनैतिक पर्यावरण
निजीकरण	सामाजिक पर्यावरण	व्यवसाय के सामाजिक दायित्व
तकनीकी पर्यावरण	समझौता–पत्र प्रणाली (MOU)	

पाठान्त प्रश्न

अति लघु उत्तरीय प्रश्न

1. व्यावसायिक पर्यावरण की किन्हीं दो विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।
2. व्यावसायिक पर्यावरण के विभिन्न प्रकारों को बताइए।
3. व्यवसाय के अनार्थिक पर्यावरण के विभिन्न तत्वों की सूची बनाइए।
4. भारतीय अर्थव्यवस्था पर उदारीकरण के किन्हीं दो प्रभावों का उल्लेख कीजिए।
5. 'नैतिकता' शब्द का क्या अर्थ है?
6. व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व से आप क्या समझते हैं?
7. व्यावसायिक नैतिकता से आप क्या समझते हैं?
8. उपभोक्ताओं के प्रति व्यवसाय के कोई दो उत्तरदायित्व बताइए।
9. पर्यावरण प्रदूषण के किन्हीं दो कारणों का उल्लेख कीजिए।

टिप्पणी

10. व्यावसायिक नैतिकता के किन्हीं दो तत्वों का उल्लेख कीजिए।
11. व्यावसायिक नैतिकता के कोई दो उदाहरण दीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

12. व्यवसाय का जनसंख्या सम्बन्धी पर्यावरण व्यावसायिक क्रियाओं को किस प्रकार से प्रभावित करता है?
13. उदारीकरण की प्रक्रिया के एक भाग के रूप में भारतीय सरकार ने क्या कदम उठाए हैं?
14. व्यावसायिक संगठनों के सामान्य संचालन में राजनैतिक पर्यावरण के प्रभाव को समझाइए।
15. एक व्यावसायिक उद्यम को समाज के प्रति उत्तरदायी क्यों होना चाहिए?
16. भारतीय अर्थव्यवस्था पर वैश्वीकरण के क्या प्रभाव है?
17. सामाजिक उत्तरदायित्व अवधारणा को संक्षेप में समझाइए।
18. कर्मचारियों के प्रति व्यवसायिक उत्तरदायित्व की गणना कीजिए।
19. सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्ष में कोई चार तर्क दीजिए।
20. व्यावसायिक नैतिकता का क्या अर्थ है?

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

21. एक व्यावसायिक इकाई के लिए व्यावसायिक पर्यावरण के महत्व का वर्णन कीजिए।
22. अनार्थिक व्यावसायिक पर्यावरण के किन्हीं दो तत्वों को समझाइए।
23. व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व का क्या अर्थ है? समुदाय के प्रति व्यवसाय के उत्तरदायित्वों का उल्लेख कीजिए।
24. व्यवसाय के आर्थिक पर्यावरण का संक्षेप में वर्णन कीजिए।
25. विभिन्न वर्गों के प्रति व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझाइए।
26. निवेशकों, उपभोक्ताओं एवं कर्मचारियों के प्रति व्यवसाय के क्या उत्तरदायित्व हैं।
27. सामाजिक उत्तरदायित्व का क्या अर्थ है? व्यावसाय के सामाजिक उत्तरदायित्व के पक्ष के कुछ बिन्दुओं को समझाइए।
28. व्यावसायिक नैतिकता से आप क्या समझते हैं? कोई तीन उदाहरण दीजिए। व्यावसायिक उत्तरदायित्व के तत्व कौन–कौन से हैं? समझाइए।
29. **''व्यवसाय पर्यावरण की जानकारी व्यवसायियों को व्यवसाय के अवसरों तथा चुनौतियों को समझने में सहायता करती है।'' इस कथन के संदर्भ में व्यवसाय पर्यावरण के महत्व का वर्णन कीजिए, जो भविष्य की योजनाएँ बनाने में व्यवसायियों का सहायक है।**

30. ''व्यवसाय को विभिन्न हित समूहों जैसे- कर्मचारी, उपभोक्ता, सरकार तथा समुदाय की अपेक्षाओं का ध्यान रखना पड़ता है।'' व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों की व्याख्या करते हुए इस कथन पर टिप्पणी कीजिए।

टिप्पणी

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

3.1 1 व्यावसायिक पर्यावरण से अभिप्राय उन बाह्य शक्तियों, तत्वों तथा संस्थाओं से है जो व्यवसाय के नियन्त्रण से बाहर हैं तथा जो व्यावसायिक उद्यम की कार्य प्रणाली को प्रभावित करते हैं।

2 (क) व्यावसायिक पर्यावरण गतिशील प्रकृति का होता है।
(ख) व्यावसायिक पर्यावरण में व्यावसायिक इकाई के बाह्य तत्व सम्मिलित होते हैं।
(ग) व्यावसायिक पर्यावरण में परिवर्तनों का पूर्वानुमान संभव नहीं है।
(घ) सही उत्तर

3.2 1. आयात–निर्यात नीति हमारे देश के आयात–निर्यात का नियमन करती है। इस नीति के माध्यम से सरकार वस्तुओं एवं सेवाओं के आयात पर शुल्क अथवा करों का निर्धारण करती है।

2. (क) सामाजिक पर्यावरण (ख) तकनीकी पर्यावरण
(ग) राजनैतिक पर्यावरण (घ) जनसंख्या सम्बन्धी पर्यावरण

3.3 1 वैश्वीकरण का अर्थ है देश की अर्थ व्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था में एकीकृत करना। इसमें वस्तुओं एवं सेवाओं, पूँजी, तकनीक एवं श्रम का राष्ट्रीय सीमाओं के पार स्वतन्त्र प्रवाह होता है।

2 (क) उ (ख) नि (ग) उ (घ) वै (ङ) न

3.4 1 व्यावसायिक नैतिकता का अर्थ है समाज एवं व्यावसायिक क्रियाओं के बीच पारस्परिक सम्बन्ध। व्यवसाय के उददेश्य, कार्य, तकनीकें एवं व्यवहार समाज द्वारा निर्धारित मानकों के अनुरूप होने चाहिएँ।

2 (क) सरकार के प्रति उत्तरदायित्व (ख) ग्राहक के प्रति उत्तरदायित्व
(ग) समाज के प्रति उत्तरदायित्व
(घ) स्वामी/अंशधारियों के प्रति उत्तरदायित्व
(ङ) कर्मचारियों के प्रति उत्तरदायित्व

3 (क) स (ख) स

टिप्पणी

करें एवं सीखें

1. अपने क्षेत्र के बाजार, डाकघर, बैंक तथा अन्य स्थानों पर जाइए तथा उन परिवर्तनों की सूची बनाइए जो सूचना तकनीकी में परिवर्तन के कारण इन स्थानों में देखने का मिलते हैं।

2. अपने क्षेत्र में बहुतायत में उपलब्ध कच्चेमाल का पता लगाइए। इस पर आधारित कितनी औद्योगिक इकाइयाँ एवं व्यावसायिक इकाइयाँ स्थापित की गई हैं? इस पर अपनी रिपोर्ट तैयार कीजिए।

अभिनयन

1. सतीश एक गांव में रहता है। एक बार वह अपने नजदीक के नगर में गया। वहां उसने एक बड़ा तथा साफ–सुथरा पार्क देखा। पार्क में एक छोटा बोर्ड लगा था जिस पर लिखा था–इस पार्क का रख–रखाव के. सी. एम. लि. कर रही है। उसने याद करने की कोशिश की कि यह नाम उसने पहले कहाँ पढ़ा है। उसे याद आया कि उसके गांव का खैराती अस्पताल भी के. सी. एम. लि. चला रही है। उसकी उत्सुकता जागी। उसने उसके सम्बन्ध में और अधिक जानने का निर्णय लिया। एक दिन वह अपने एक दोस्त के पिता श्री के. मोहन से मिला :

सतीश : अंकल, शुभ प्रभात।

के. मोहन : शुभ प्रभात, सतीश कैसे हो?

सतीश : ठीक हूं! और आप कैसे हैं?

के. मोहन : एकदम ठीक! बेटा कैसे आना हुआ?

सतीश : अंकल, यदि मुझे ठीक से याद है तो आप के. सी. एम. लि. में काम करते हैं। ठीक है ना।

के. मोहन : तुम ठीक कहते हो। मैं वहां जनरल मैनेजर (प्रशासन) के पद पर कार्यरत हूं। लेकिन तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो?

सतीश : अंकल आज मैं जब पार्क में गया तो मैंने पाया कि उस पार्क का रख–रखाव के. सी. एम. लि. कर रही है तथा मेरे गांव के खैराती अस्पताल का भी।

बताइए, कोई कम्पनी अपनी नियमित गतिविधियों से हटकर अन्य गतिविधियों पर ध्यान क्यों देती है,और वह भी ऐसी जो कि उसके खर्चों में वृद्धि करती हो।

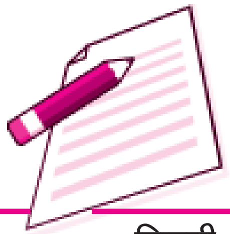

टिप्पणी

के. मोहन : बेटा कम्पनी इन सभी कार्यों को समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का एक भाग मानते हुए करती है और यह कम्पनी के सामाजिक उत्तरदायित्व कहलाते हैं।

सतीश : सामाजिक उत्तरदायित्व? ये क्या हैं?

(श्री के. मोहन ने सतीश को व्यवसाय के सामाजिक उत्तरदायित्वों की अवधारणा को समझाया।)

अब आप अपने लिए भूमिका चुनकर तथा अपने एक मित्र के लिए भूमिका चुनकर बातचीत जारी रखें।

2. राहुल जो कि एक श्रम संगठन का नेता है, ने अपने अनुयाइयों से एक सभा में, कारखाने में वह किन–किन समस्याओं का सामाना कर रहें हैं, पर चर्चा की।

   मजदूरों ने राहुल को कार्य के घंटे, बुरी कार्य परिस्थितियां, रहने के लिए मकान, मनोरंजन आदि समस्याओं से अवगत कराया।

   राहुल : कोई बात नहीं! मैं मैनेजर से मिलूंगा तथा उसे व्यवसाय के मजदूर कर्मचारी, समाज, सरकार आदि के प्रति सामाजिक उत्तरदायित्वों को समझाऊंगा।

राहुल और कारखाना मैनेजर के बीच चर्चा की कल्पना कर मैनेजर द्वारा विभिन्न रूचि रखने वाले समूहों के प्रति निभाए जा रहे सामाजिक उत्तरदायित्वों पर चर्चा को आगे बढ़ाइए।